एस. एन. एस. आर.के.एस. कॉलेज, सहरसा

(सम्बद्ध बी.एन. मंडल यूनिवर्सिटी, मधेपुरा, बिहार)

****

ऑनलाइन शिक्षण

****

प्रस्तुति : डॉ रिपुंजय कुमार सिंह (हिंदी विभाग,एस. एन. एस. आर.के.एस. कॉलेज, सहरसा)

****

Scanned by CamScanner

अध्ययन व विश्लेषण शिक्षण

भाग-12

****

बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी, तृतीय वर्ष

****

पंचम पत्र - 'नाट्य साहित्य'

****

Scanned by CamScanner

जयशंकर प्रसाद के महत्वपूर्ण ऐतिहासिक नाटक 'अजातशत्रु' का भाग -1 से आठ तक पाठ विश्लेषण व अध्ययन किया गया है,इसके उपरांत इस नाटक के सारगर्भित अंशों का मूल पाठ भी अत्यावश्यक है.अतः इसके मूल पाठ का अंश प्रस्तुत है :

जयशंकर प्रसाद- 'अजातशत्रु'

[अध्ययन व विश्लेषण भाग -8 का शेष (नाटक का मूल पाठ)……]

Scanned by CamScanner

प्रथम दृश्य

****

स्थान - प्रकोष्ठ

राजकुमार अजातशत्रु , पद्मावती , समुद्रदत्त और शिकारी लुब्धक।

Scanned by CamScanner

अजातशत्रु : क्यों रे लुब्धक! आज तू मृग-शावक नहीं लाया। मेरा चित्रक अब किससे खेलेगा

समुद्रदत्त : कुमार! यह बड़ा दुष्ट हो गया है। आज कई दिनों से यह मेरी बात सुनता ही नहीं है।

लुब्धक : कुमार! हम तो आज्ञाकारी अनुचर हैं। आज मैंने जब एक मृग-शावक को पकड़ा, तब उसकी माता ने ऐसी करुणा भरी दृष्टि से मेरी ओर देखा कि उसे छोड़ ही देते बना। अपराध क्षमा हो।

Scanned by CamScanner

अजातशत्रु : हाँ, तो फिर मैं तुम्हारी चमड़ी उधेड़ता हूँ। समुद्र! ला तो कोड़ा।

समुद्रदत्त : (कोड़ा लाकर देता है) लीजिए। इसकी अच्छी पूजा कीजिए।

पद्मावती : (कोड़ा पकड़कर) भाई कुणीक! तुम इतने दिनों में ही बड़े निष्ठुर हो गए। भला उसे क्यों मारते हो?

अजातशत्रु : उसने मेरी आज्ञा क्यों नहीं मानी?

Scanned by CamScanner

पद्मावती : उसे मैंने ही मना किया था, उसका क्या अपराध?

समुद्रदत्त : (धीरे से) तभी तो उसको आजकल गर्व हो गया। किसी की बात नहीं सुनता।

अजातशत्रु : तो इस प्रकार तुम उसे मेरा अपमान करना सिखाती हो और वासवी जाती हैं।

Scanned by CamScanner